




सलोकु ॥

सरब कला भरपूर प्रभ

बिरथा जाननहार ॥

जा कै सिमरनि उधरीऐ

नानक तिसु बलिहार ॥15॥





असटपदी ॥

टूटी गाढनहार गोपाल ॥

सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥

सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥

तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥

रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥

अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥

आपन कीआ कछू न होइ ॥

जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥

तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥

गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥






रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥
प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥
धनवंता होइ किआ को गरबै ॥
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥
अति सूरु जे कोऊ कहावै ॥
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥
जे को होइ बहै दातारु ॥
तिसु देनहारु जानै गावारु ॥
जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥
नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥







जिउ मंदर कउ थामै थमनु ॥
तिउ गुर का सबदु मनहि असथमनु ॥
जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥
प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥
जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥
गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥
जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥
तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥
तिन संतन की बाछउ धूरि ॥
नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥





मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥
पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥
दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥
अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥
जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥
भूला काहे फिरहि अजान ॥
कउन बसतु आई तेरै संग ॥
लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥
राम नाम जपि हिरदे माहि ॥
नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥





जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥

राम नामु संतन घरि पाइआ ॥

तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥

राम नामु हिरदे महि तोलि ॥

लादि खेप संतह संगि चालु ॥

अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥


धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥

मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥


इहु वापारु विरला वापारै ॥

नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥





चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥
अरपि साध कउ अपना जीउ ॥
साध की धूरि करहु इसनानु ॥
साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥
साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥
अनिक बिघन ते साधू राखै ॥
हरि गुन गाइ अम्रित रसु चाखै ॥
ओट गही संतह दरि आइआ ॥
सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥





मिरतक कउ जीवालनहार ॥

भूखे कउ देवत अधार ॥

सरब निधान जा की द्रिसटी माहि ॥

पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥

सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥

तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥

जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥

सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥

करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥

नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥





जा कै मनि गुर की परतीति ॥

तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥

भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥

जा कै हिरदै एको होइ ॥

सचु करणी सचु ता की रहत ॥

सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥

साची द्रिसटि साचा आकारु ॥

सचु वरतै साचा पासारु ॥

पारब्रह्मु जिनि सचु करि जाता ॥

नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥

